असतो मा सद्गमय् ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय् ।
मृत्यों मां अमृतंगमय् ।

म्हारो देस निमाड़

निमाड़ी कविताएँ एवं गीत

मणिमोहन "निमाड़ी"

- म्हारो देस निमाड़ -

निमाड़ी कविताएँ एवं गीत

- रचयिता -

माणिमोहन "निमाड़ी"

सन् १९७०

मूल्य १ रु. ५० पैसे

प्रकाशक—

मणिमोहन "निमाड़ी"

कार्यालय, निमाड़ी प्रकाशन

२६ परदेशीपुरा, खण्डवा. (म० प्र०)

प्रथमावृत्ति १६७०

टिप्पणी

50 – 60 साल पहले
किशोर-वय के बालकों के
नाम के साथ सरनेम नहीं
लिखा जाता था।

अतः –

मणिमोहन = मणिमोहन चवरे

कलात्मक–प्रारूप–

मणिमोहन "निमाड़ी"

मुद्रक–

माखनलाल माहेश्वरी

फेमस प्रिंटिंग प्रेस गोलबाजार,

खण्डवा. [म. प्र.]

जन्मभूमि को—

तन भी थारो ।

मन भी थारो ।

साथ मऽ जीवन भी थारो ।

जनम भूमि निमाड़,

म्हारी देह को—

कण-कण तुम्हारो ॥

"निमाड़ी"

लेखकीय-मंतव्य

निमाड़ी प्रकाशन की प्रथम भेट "म्हारो देस निमाड़" आपके हाथ में है, स्वीकार कीजिए। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं अपनी प्रथम कृति को अपनी नानी 'भाषा' 'निमाड़ी में प्रकाशित कर रहा हूँ। शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जिसे अपनी जन्म भूमि और भाषा से लगाव न हो। मुझे गर्व है मैं अपनी निमाड़ी भाषा की साहित्यिक जंजीर में एक छोटी सी कड़ी जोड़ सका हूँ। विगत तीन वर्षों से दक्षिण भारत में रहकर मैंने अनुभव किया कि वहाँ का हर व्यक्ति अपनी भाषा के लिये जान देने को तत्पर है ऐसे क्षेत्र में जहाँ अंग्रेजी का प्रमुख और हिन्दी की स्थिति दयनीय है, अपनी भाषा को संजीव बनाये रखने के लिये मैंने अपने नाम के आगे 'निमाड़ी' लगा लिया है। लोगों के पूछे जाने पर मैं गव से कहता हूँ, 'निमाड़ मेरा देश है और मेरी भाषा है निमाड़ी। बस यहीं से इस पुस्तक की उत्पत्ति हुई।

श्री बाबूलालजी मारकंडेय के शब्द, "हम लोगों में जन्म से ही कला के जन्तु भरे पड़े हैं। लेकिन वे सोये हुए हैं और उन्हें जागृत करना हमारे नवयुवकों का काम है, "मेरे दिल में घर कर गये।

अल्पायु में ही उक्त जन्तुओं के जागृतार्थ उचित मार्ग दर्शन का श्रेय सुभाष हाई स्कूल खण्डवा के

प्राचार्य श्री द्वारकाप्रसादजी जायसवाल तथा मेरे गुरू एवं अग्रज श्री गोपाल प्रसाद साद को है। सबसे पहली निमाड़ी कविता 'एक दिन की हूँ बात बताऊँ' आज से दस बरस पूर्व मैंने ग्यारह साल की उम्र में लिखी थी।

मेरे जीवन पर निमाड़ के सुप्रसिद्ध लेखक श्री रामनारायणजी उपाध्याय के व्यक्तित्व का बहुत प्रभाव पड़ा।

मेरे निमाड़ की चप्पा-चप्पा जमीन का बच्चा बच्चा अपने आप में एक पूरा कलाकार है। निमाड़ी प्रकाशन इस बात की पूरी-पूरी कोशिश करेगा कि अगली बार निमाड़ी के अन्य कवियों की रचनाओं का एक संग्रह काव्य छपे।

भूमिका लेखक श्री गोपाल प्रसाद साद और उन सभी महानुभावों का, जिहोंने इस पुस्तक के लिये अपने उद्‌गार लिखे, मैं हृदयाभारी हूँ। साथ ही प्रकाशन में श्री शिवशंकर जी जोशी, अबतार सिंह सिंधू, श्री कमलचन्द मालवीया तथा राजाराम भाई का आभार मानता हूँ।

आपके अलोचनात्मक विचारों का स्वागत है। आशा है मेरा लेखन और प्रकाशन आपके मनोरंजनार्थ सहायक सिद्ध होगा।

कार्यालय
निमाड़ी प्रकाशन
खण्डवा.

मणिमोहन 'निमाड़ी'

भूमिका

लोक भाषा का साहित्य नाखून से तराशे गये चाँवल की तरह होता है। उसमें अनेकों मनोरम उपमायें एवम् अछूती कल्पनायें संजोई होती है। लोक भाषाओं का शब्द कोष इतना समृद्ध रहा है कि उसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव को व्यक्त करने के लिये अलग अलग शब्द पाये जाते है। लोक भाषायें उन सहायक नदियों की तरह होती है जिनसे राष्ट्रभाषा समृद्ध होते आयी है। अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिये निमाड़ी लोकभाषा के पास मुहावरों से भरी सुन्दर शैली, अलंकारों से सजी भाषा और मौलिकता से युक्त विपुल शब्द सम्पदा रही है।

भाई मणिमोहन न सिर्फ अपने उपनाम से "निमाड़ी" है वरन उन्होंने जो कुछ भी लिखा है। निमाड़ के लोक जीवन से आत्मसात होकर लिखा है। इसी से उनकी रचनाओं में यहाँ की माटी की सोंधी सुगन्ध, प्रकृति का सुन्दर चित्रण एवम् जीवन तथा संस्कृति का सजीव संस्पर्ष अंकित है।

"म्हारो देस निमाड़" आपकी नवीनतम रचनाओं का प्रथम काव्य संग्रह है। इसमें कहीं आप ज्वार, कपास, मुंगफली और तुवर की लटलूम फसल का आनन्द ले सकते हैं कहीं चाँद पर

जाने वाले युग में भी अन्नदाता किसान से नांगर हंकालने, बक्खर जोतने और फसल के नाम पर गरीबों के कांटेदार गोखरू की व्यथा सहते देख सकते है।

इसमें एक और यदि स्थानीय रंगत लिये मांडवे की पंगत का सजीव वर्णन है तो दूसरी ओर बहती नदी, तैरती नाव के किनारे बसा मामा का गाँव सबका मन लुभाने की क्षमता रखता है।

इस संग्रह में अनेकों ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जो बोलचाल की भाषा से तो लुप्त होते जा रहा है लेकिन लोक-साहित्य की दृष्टि से जिनका अपना सौंदर्य है। जैसे "चंची" कहते ही कटी हुई सुपारी और तम्बाकू रखने की कपड़े की थैली का चित्र आँखो के सामने तैरने लगता है। "मावटा" कहते ही बे मौसम का पानी मन को भिगो जाता है।

सब मिलाकर पुस्तक अत्यन्त ही सुन्दर बन पड़ी है। आशा है इस तरूण कवि के सशक्त काव्य संग्रह को सबका स्नेह मिलेगा।

साहित्य-कुटीर — रामनारायण उपाध्याय

ब्राह्मपुरी खण्डवा (म. प्र.)

५-५-३०

श्रीमती ललिता शास्त्री का पत्र लेखक के नाम

प्रिय महोदय,

मुझे आपके दिनांक २०-३-७० के पत्र द्वारा जानकारी प्राप्त हुई कि आप स्थानीय भाषा निमाड़ी में "म्हारो देस निमाड़" नामक पुस्तक का प्रकाशन करने जा रहे हैं। मै इसकी सफलता के लिये अपनी शुभ-कामनाएँ भेजती हूँ।

नई दिल्ली
३०-३-७०

भवदीया
ललिता
(श्रीमती लालबहादुर शास्त्री)

लेखक, श्रीमती ललिता लालबहादुर शास्त्री के साथ उनके निवास स्थान पर, दिल्ली में, निमाड़ की संस्कृति एवं 'निमाड़ी–प्रकाशन' से अवगत कराते हुए।

उद्‌गार

कवि श्री मणिमोहन 'निमाड़ी' निमाड़ के है, वे आजकल दक्षिण भारत में सेवा-रत हैं. निमाड़ से सुदूर रह कर भी वे अपने निमाड़ के घर, आंगन, गांव, गली खेत, खलिहान और अमराई को नहीं भुला पाये है, स्मृतियों के ताने-बाने उनके मन को जैसे झक-झोर देते हैं, और उन्हीं बोलों के संग्रह का नाम है "म्हारो देस निमाड़" काश कि निमाड़ के प्रतिष्ठित जन भी निमाड़ के लोक एवम् जनपदीय साहित्य के सम्बन्ध में कभी कुछ सोचते और निमाड़ की काली मिट्टी की क्यारियों में झूमते इन नव-कुसुमों को प्रोत्साहन देते तो मेरी यह मान्यता है कि निमाड़ का लोक एवम् जनपदीय साहित्य राष्ट्र के किसी भी लोक एवम् जनपदीय साहित्य के समकक्ष ही माना जाता ।

'म्हारो देस निमाड़' निमाड़ के जनपदीय साहित्य का प्रथम कविता संग्रह है। प्रयास अनुकरणीय है।

अपनी समस्त शुभ कामनाओं सहित

अक्षय त्रतिया — **बलराम पगारे**

संवत् २०२७ — हरीगंज, खण्डवा

प्राक्कथन

रळकणी

क्र.	नाम		पृष्ठ संख्या
	रचयिता		
	~~प्रकाशक~~		
	जननी को परम पूज्यनीया "माँ" श्रीमती		
	सौ. सुशीला देवी के चरणार्विंद में सादर		
	जन्म भूमि को		
	प्रकाशकीय		
	भूमिका	श्री रामनारायण उपाध्याय	
	शुभ सन्देश	श्रीमती ललिता शास्त्री	
	उद्‌गार	श्री बन्नराम पगारे	
१	म्हारो देस निमाड़	गीत	१
२	मंगलाचरण	गीत	२
३	तन को रोग	गीत	३
४	बैंधड़ को पोर्‌यो	कविता	४
५	मांडवा की पंगत	कविता	७
६	मामाजी को गांव छे	कविता	१०
७	परदेशी बालमा	गीत	१२
८	दिन असाड़ को आयो रे	गीत	१४
९	कवँ आओगा तुम	युगल गीत	१६
१०	एक दिन की हूँ बात बताऊँ	कविता	१८
११	घत्तो दऽ	कविता	२१
१२	सिरी भगवान	कविता	२४
१३	हात रे भाई रे	कविता	२७

१४	म्हारा अँगणा मऽ सदा सुहागेण	लोरी गीत	२९
१५	बना-१	सहगान	३१
१६	बना-२	सहगान	३३
१७	माता गौरां खऽ आयो संदेश	गरभा गीत	३४
१८	धोती को कस्टो	कविता	३६
१९	असी निमाड़ की छोरी	कविता	३७
२०	चिल्ड्या	कविता	३९
२१	ग्यारस खोपड़ी	कविता	४०
२२	नमस्कार	गीत	४१
२३	पावणाँजी से	गीत	४२
२४	बहादुरी	गीत	४३
२५	मायक्या मऽ नि लगतो जिव	युगल गीत	४४
२६	जिव को जंजाळ	गीत	४६
२७	जै खिचड़ी मैया	आरती	४८
२८	नाँगरू-वखरू नऽ गोखरू	कविता	५०
२९	चाय महिमा	कविता	५३
३०	नानो चिरक्यो	गीत	५५
३१	पिया मिलन की आस	गीत	५६
३२	मोतीचूर का गोळा	गीत	५८
३३	कमळयो	कविता	६१
३४	बहू भानुमती	आरती	६३
३५	दूज को चाँद निकळयो	युगल गीत	६५
३६	राखी को तिवहार छे	कविता	६८
३७	गड़बड़ रामायण	दोहा-चौपाई-छंद	७१

म्हारो देस निमाड़

सारा जग सी भलो घर बार,
असो म्हारो देस निमाड़ ।
हो–यहाँ पऽ सोन्ना का घर मऽ–
चाँदी का किवाड़ ।
असो म्हारो देस निमाड़ ॥

धवळा–धवळा खेत खऽ,
कपास सजावऽ ॥
घरऽ घर' गोंगला की–
घाणी छोड़ावऽ ।
तोर को भार,
झुली झुली आवऽ ।
उड़द्या की दावण–
खळा मऽ बगळावऽ ।
खेत मऽ जुवार माता,
करऽ ओ खिलवाड़ ।
असो म्हारो देस निमाड़ ॥

सासूजी म्हारी माय जणी राखऽ ।
ससरा जी चौका मऽ नजर नि नाखऽ ।
नळंद जेठाणी बड़ी बईण जसी घर मऽ ।

[२]

देवर-देराणी बिना चैन नि घर मऽ।
भोळा स्वामी, अजाणयों ससरवाड़।
असो म्हारो देस निमाड़ ॥

फागुण मऽ होळई पर,
फगवा गावऽ।
चईत मऽ रणुबाई का-
बड़वा धुमावऽ।
पोळा पऽ पून्याजी,
बैल्या दौड़ावऽ।
'सिंगाजी' की पुन्योव पर-
जतराँव भरावऽ।
उनको लावऽ—
संदेशो असाड़।
असो म्यारो देस निमाड़ ॥

'गोंगला=मूंगफली के दाने

तन को रोग

पिया थारी नगरी सी, चिट्ठी नि आवती ।
थारा बिना रातऽ-रात नींद नि आवती ।
पिया थारी प्रीतऽ मऽ हुई गई हऊँ पेळई,
लोग कहे तन को रोग रे ॥

हर्‌यो भर्‌यो अंगणो भी, लगऽ सूनो-सूनो ।
चलऽ ठंडी हवा पिया, दुःख दिन दूणो ।
देखी-देखी आऊँ, हऊँ वाटऽ थारी बजार मऽ
हसणऽ लग्या सारा लोग रे ॥

सखी मसखरी करे मारऽ रे कंकरिया ।
बईणऽ देवऽ गाळई, गोरी झूठा छे सांवरिया ।
लागी रे लगन थारी, सूखी गयो तनऽ-मन,
कसी हऊँ भुलाऊँ थारी याद रे ॥

कोयळ की कड़वी कुहुक लगऽ आज रे ।
लोकऽ-लाज छोड़ी मनऽ थारा लेणऽ राज रे ।
या तो लगई लेओ हमखऽ गळा सी, या हम-
सरी खऽ लगई लेवाँ आग रे ॥

बैंधड़ को पोर्‍यो

बैंधड़ अर्थात सौतन। सौत के नाम से स्त्रियों में जन्मजात जलन होती है, और सौत का लड़का तो किसी शत्रु से कम नहीं। ऐसा बहुचर्चित है । शायद इन्हीं भावों को लेकर कवि ने निम्न रचना गढ़ी है । [भू. ले.]

काई बताऊँ बईण
कसी सुणाऊँ बईण
या नि सुणती
वो खऽ कयगु
वा नि सुणती
तूखऽ कयगु
घर की वात नऽ
कसी कयगु
अपणों सुख-दुख
कुण खऽ कयगु
ओखी कयगु
आखी कयगु
गुरु सी कयगु
फिरी से कयगु
अद्धर सी कयगु
'हेटऽ सी कयगु

म्हारो छोरो
म्हारो जायेल
लाड़ को बेटो
दूध को धायेल
उनका हाथऽ खायेल
म्हारा हाथ पायेल
केतरो सुन्दर
केतरो सुकुमार
फुन्दा सैं को
म्हारो होर्‍यो-
न, एक छे उ,
बैंधड़ को पोर्‍यो ॥
रट्ठ को रट्ठ छे
लट्ठ को लट्ठ छे
काळई माय को
काळो पूत छे।

ओखो भूत छे
जरा नि सुवातो
देख्या डोळो
नि-भावतो
ताळा लगई दे ऊँ
चोरी नऽ खाई ले
सीका पऽ धरी दे ऊँ
चेंढ़ी नऽ खाई ले
दूध नि दे ऊँ
पाणी पी ले
तातो नि दे ऊँ
तो बासीज खाई ले
सीरो नि दे ऊ
लाप्सी खाई ले
बाट नि दे ऊ
तो घाट खाई ले
'उ' नि होय तो
पट--पट खाई ले
हाऊँ नि रहूँ तो
गट-गट पी ले
मामो आवऽ तो
मुळुक मुळुक देखऽ
मावसी देखी
पुळुक पुळुक रड़ऽ
धेला का नाम को नि
कौड़ी का काम को

मांडवा पर लटकेल
होय जसो तोर्‌यो
असो छे बईण
बैंधड को पोर्‌यो ।।
नाक सिकोड़ती
मुंडो मरोड़ती
दांत खोरतो
डोळा मटकावती
वाकड़ी चालती
अद्धर देखती
ठोकर खाती
राम नाव लेती
पल्लव खोसती
माथो ढाकती
गड़बड़ की मांय आई
[२]चंची कड़ मऽ
लेकरू धड़ मऽ
'बिलूद' वाळई
काई करज वो
डोडा बइण खऽ
काई कैंज वो"
कयती-कयती
बूढ़ो हाड़
डोकरी की जात
भूला पर बठी गई
"काई बताऊं माय

कसी सुणाऊं माथ
बैंधड़ मरी गई
बलाय धरी गई
उनका पाछऽ
पचण धरी गई
म्हारी छत्ती पर
जळन धरी गई
सबका लेणऽ
काळ धरी गई

बिना सिरका को
ठंड मऽ सोई जाय
खाट नि देऊँ
[3]उखडा मऽ सोई जाय
मटेड़ा मऽ दिन भरी
स गललोटऽ
जसो गास्या का
हेटऽ को [4]दोर्‌यो
ओ माय! असो बकज उ,
बैंधड़ को पोर्‌यो ।।

[1]हेटऽ=नीचे । [2]चंची = कपड़े की थैली, सुपारी, तम्बाखू की।
[3]उखंडा = उबड़खाबड़ जगह । [4]दोर्‌यो = बड़ी दरी ।

[७]

मांडवा की पंगत

निमाड़ की मौसर-रूढ़ियों में पंगती का एक अपना विशिष्ठ स्थान रहा है। शादी में लड़के वालों की ओर से रुखवट, लड़की के मामा की तरफ से क्वांरी, जच्चा के बच्चा वालों की ओर से चौरासी एवं शोक पंगती लाह्येण इत्यादि प्रसिद्ध पंगतियाँ हैं। इनमें से कई पंगते ऐसी हैं जिनके अवसर यदा कदा ही मिल पाते हैं— जैसे रुखवट, चौरासी इत्यादि। यह भी संभव है कि आगे आने वाली तीन पीढ़ियों के बाद पंगत शब्द मात्र कल्पना के और कुछ न रह जाय— जैसे हमारे लिये पांच आने सेर घी। यहाँ कवि ने मंडप की पंगती का एक हास्य चित्र खींचा है। [भू० ले०]

धोती सौळ्या की रंगत छे।
कळस्या गिलास संगत छे।
मांडवा की आज पंगत छे॥

दुल्लव की माय छस छम।
पोर्‌या पारई कर से मम्मम।
चरकी सेव कुरुम कुरुम।
पापड़ दड़म्—दड़म्।
मन्दिर मऽ घंटी टनाटन्।
कळस्या वाजऽ ठनाठन्।
लड्डू फूटऽ दनादन।

इ खाऊँ, उ खाऊँ करऽ मन ।
पातळ दोना की रंगत छे ।
कळस्या गिलास संगत छे ।
मांडवा की आज पंगत छे ॥

नाना का भायजी अल्यांग आओ ।
घर म सी वास की टोपली लाओ ।
टोपली मऽ लड्डू लइ लेओ ।
बाळक नऽ ख जरा-जरा देओ ।
घींव थोड़ो-थोड़ो सो दी जे ।
हाथ म धेलो सुपारी ली जे ।
ब्रह्मगीर वाळा महाराज की जै ।
गोविन्दा बाळा साहेब की जै ।
पालकी मारणऽ की रंगत छे ।
कळस्या गिलास संगत छे ।
मांडवा की आज पंगत छे ॥

बाळक दाळ-भात फुड़कावऽ ।
सुकुलजी लड्डू पऽ हाथ मारऽ ।
गुरूवा बाजा बजाड़ऽ ।
[1]चिंघाड़-भोंगो अल्लग गगावऽ ।
ठाटी मऽ पूरी लइ आओ ।
वावड़ी भरी कढ़ी लइ जाओ ।
स्याक लगई लगई नऽ खाओ ।
एक जण बाई न मऽ जाओ ।

लेकरू बाळ नऽ की रंगत छे।
कळस्या गिलास संगत छे।
मांडवा की आज पंगत छे॥

पयली जल्दी उरक से।
दूसरी पंगत बढ़ाड़ से।
दुल्हव कुंकू लगाव से।
नानो धोती संभाळ से।
पंचाती गिलास वापिस लेओ।
जिमणया खऽ सुपारी देओ।
नमः पारवती पते।
हर-हर महादेव।
धरमशाळा मऽ आज रंगत छे।
कळस्या गिलास संगत छे।
मांडवा की आज पंगत छे॥

चिंघाड़-भोंगा = लाउड स्पीकर

मामाजी को गाँव छे

मामाजी को गाँव छे।
नाव ये को खैगांव छे॥

खेत खळो नऽ वाड़ी प्यारी,
घर अंगणा की शोभा न्यारी।
पिछवाड़ऽ कांदा की क्यारी,
[1]वांदरा नऽ की छे बलिहारी।
पास मऽ वयती नदी छे,
नदी मऽ चलती नाव छे।
मामाजी को गाँव छे।
नाव येको खैगांव छे॥

ठंड मऽ बाळक गोदड़ी वैड़ऽ,
मामी सौंदारऽ घट्टी चैड़ऽ।

---

[1]वांदरा-बन्दर

गाय करऽ गौमात्तिर, औड़ऽ,
वाछरू वो का पाछऽ दौड़ऽ
गोबर पूंजो करसे कमदार,
वाड़ा मऽ गोठाँव छे।
मामाजी को गाँव छे।
नाव ये को खैगांव छे॥

गाँव मऽ छे मन्दिर गिरधारी,
मन्दिर मऽ एक बामण पुजारी।
गौरिशंकर त्रितिलक धारी,
विट्ठल रूखमई नाव विहारी।
कावा फिरऽ सब वारी वारी,
जहाँ बरात को पड़ाव छे।
मामाजी को गाँव छे।
नाव यो को खैगांव छे

पोर्‌या लिखऽ नऽ मास्तर वाचऽ,
काळू दाजी पोथी वाचऽ।
गड़बड़ भाई की बयरो काळई,
सौंदारऽ आवसे फेरी वाळई।
छीतर भाई की रड़तै साळई,
फुवाजी को उच्चो नाव छे।
मामाजी को गाँव छे।
नाव येको खैगांव छे॥

: परदेशी बालमा :

कबूतरी-डाक के जमाने में एक दूर का गांव ही विदेश के समान माना जाता था। आमतौर पर यही धारणा है कि, विदेश जाकर आदमी अपना रंग बदल लेता है। इस गीत में एक पत्नी अपने विदेश जाने वाले पति से विनती करती है। [भू. ले.]

परदेशी म्हारा बालमा,
तुम जल्दी सी घर आवजो।
बूट-सूट-पतलून पियाजी तुम-
वहाँ सी मत— लावजो ॥

दूर पियाजी देस मऽ तुमखऽ,
याद हमारी आऽव से।
बिना तुम्हार रोटी-पाणी-
हम खऽ कसी भाऽव से।
हाल-चाल सब वहाँ का हमखऽ,
चिट्ठी लिखी बतावजो।
परदेशी म्हारा बालमा,
तुम जल्दी सी घर आवजो ॥

पूजा करजो तिलक लगाव जो ॥
धरम सी तुम मत हलजो।
भ्रष्ट विदेसी रस्ता नऽ पर-

[१३]

भूली नऽ भी मत चलजो ।
पाउडर लाली देखी पियाजी तुम,
अँखियाँ मती लड़ाव जो ।
परदेसी म्हारा बालमा,
तुम जल्दी सी घर आवजो ।।

पढ़ जो लिख जो ध्यान लगई नऽ,
[1]औव्वल नम्बर आवजो ।
भणतऽ-भणतऽ थकी जाओ तो-
जल्दी सी सोई जाजो ।
सिवाय हमारा सपना मऽ भी,
कोई खऽ मती बुलावजो ।
परदेसी म्हारा बालमा,

तुम जल्दी सी घर आवजो ।।
काम-काज हम कसा करॉंगां,
याद तुम्हारी——आऽव से ।
जत पत करतऽ दिन काटॉंगां,
रात खऽ नींद नि आऽव से ।
हम तो देखॉंगां वाट तुम्हारी-
हम खऽ मत बिसराव जो ।
परदेसी म्हारा बालमा,
तुम जल्दी सी घर आवजो ।।

---

[1]औव्वल=पहले

सासूजी खोब याद करऽगा,
लुगड़ो एक लइ आवजो ।
म्हारा लेणऽ कई नि चायेजे,
तुम वापिस आई जाजो ।
विनती करूँ हूँ, संग विदेसी-
²नार मती लई आवजो ।
परदेसी म्हारा बालमा,
तुम जल्दी सी घर आवजो ॥

---

²नार=औरत (नारी का अपभ्रंश)

दिन असाड़ को आयो रे

रिमझिम-रिमझिम पाणी वरसऽ,
दिन असाड़ को आयो रे ।
ठंडी—ठंडी हवा चलऽ,
कोई याद पिया की लायो रे ॥

मटकी लै नऽ चली पणीहारिण,
पांय मऽ घुंघरू वाजऽ रे ।
हाथ मऽ मंहेदी, डोळा मऽ काजळ,
सरी पऽ साड़ी राजऽ रे ।

पांय उठावऽ खुशी—खुशी,
वौखऽ देस पिया को भायो रे।
रिमझिम-रिमझिम....

हिरण—हिरणियाँ, मोर—मोरनी,
ठुमकऽ अपणी ठांव मऽ।
सुण-ओ-बदली आज वरस जे,
म्हारा पिया का गांव मऽ।
हरी धरती नऽ इन्द्र धनुष खऽ,
मंगळ—सूत्र बणायो रे।
रिमझिम-रिमझिम....

नवी-नवी आई नवा देस मऽ,
नवी-नवी ई रात छे।
नवा पिया छे, नवी प्रीत छे,
नवी-नवी हर बात छे।
नवी उमर मऽ नवो बरस,
काई नवा-नवा रंग लायो रे।
रिमझिम-रिमझिम....

ससरवाड़ म्हारो, स्वरग बणी गयो,
मायक्यऽ खवर कराड़ो रे।
श्रावण मऽ भाई लेणऽ आवजो,
चिट्ठी असी लिखाड़ो रे।
बीज-बीजई तैयार करो,
अवँ दिन वावणी को आयो रे।
रिमझिम-रिमझिम....

कवँ आओगा तुम

इस युगल गीत में कवि ने सगाई के बाद और शादी के पहले वाले समय में दो दिलों को समझा है। उग्र नायिका और धीरोदात्त नायक का एक तुलनात्मक चित्र यहाँ उभर आया है। [भू० ले०]

लड़की— कवँ आओगा तुम ।
डोली लाओगा तुम ।
कोई तारीख तिथी बताओ रे ।
म्हारा अंगणा मऽ बरात लाओ रे ।

लड़का— येतरी जल्दी मत करो ।
गोरी धीरज धरो ।
थारा द्वारऽ घोड़ा पर आऊँगा ।
सबका सामनऽ लगीणऽ लगाऊँगा ।।

लड़की— तुम तो झूठा पिया ।
केतरा वायदा किया ।
हमनऽ कारट-प-कारट लिखाया ।
तुम मिलनऽ खऽ एक दिन नि आया ।।

लड़का— गंगा माई की कसम ।
झूठ बोलां नि हम ।
तुम्हारा कारट तो सब घर मऽ आया ।
पण भायजी नऽ एक नि बताया ।।

लड़को— चोरी सी चिट्ठी लिखो।
गाँव मऽ आई नऽ मिलो।
तुम खऽ हाल जिया का बताऊँगा।
कसा काट्याज दिन हऊँ सुणाऊँगा॥

लड़का— म्हारी वाऽतऽ सुणो।
तुम नादान मत बणो।
पूरा सरी पर चाँदी को वजन होयगा।
नहीं तो दुनियाँ वाळा काई कहेगा॥

लड़की— तुम खऽ दुनिया को डर।
हम खऽ तुम्हारी फिकर।
पिया रीति रिवाज सब छोड़ो॥
आई नऽ जल्दी सी नातो जोड़ो॥

लड़का— तुम घबराओ मती।
म्हारी श्यामवती।
बस दुई एक महीना की वात छे।
फिरी जनम भरी को साथ छे॥

एक दिन की हूँ बात बताऊँ

राखी के पावन दिन एक मालवी बहन अपने निमाड़ी भाई के लिए राखी वगैरह खरीदने बाजार जाती है। उसी की जुबानी इस हास्य कविता के माध्यम से अवतरित हुई है। [भू० ले०]

एक दिन की हूँ बात बताऊँ,
भैया के घर जाणो थो।
कुछ उपहार, एक माळा
अरू राखी मखें लाणो थो॥

एक दूकान में हूँ गई,
वहाँ बठ्यो नन्दीगण भैर्‌यो थो।
घूरि घूरि के मखें,
देखे मरिगो ढ़ेर्‌यो थो।

समझि गई हूँ देखि के,
ये छे लूटन वाळो।
सवा आना की आठ पाई।
जे काई गड़बड़ घोटाळो।

पाई धेलो की वैड़ी छे,

ये भेद नहीं मने जाणो थो ।।
अरे भूलि गई सरकार,
वाने टीन को पैसो चलाणों थो ।।
एक दिन की.....

दूसरी दुकान मे हुँ गई,
वो दुकान दार मर्‌यो काणों थो ।
मुच्छी असी ओ को जसी,
सिंदेण को फड़यो लटकतो थो ।
वो बोल्यो, 'जे रुपयो खोटो,
सौदा मऽ पड़ेगो हमखें [1]टोटो ।'
हुँ बोली, 'नहीं लेणु राखी,
सौदा मऽ तू हमखें लूटऽ ।
जा एक दिन थारी ये,
दूसरी आँख भी फूटऽ ।'
काई बात-बात मऽ हुई गयो,
गधो कुम्हार सी स्याणो ।।
एक दिन की.....

[1]टोटो = घाटा = हानि

ली राखी एक सुन्दर,
अनऽ ली एक माळा ।
थरू प्रसाद का वाटऽ मने,
लिया चिरौंजी दाणा ।
घर गई, भैया खऽ टीको लगायो,
भाई-बहिन को प्रेम बढ़ायो ॥
भैया ने दी घड़ी, अरी !
बो भैयो म्यारो स्याणो थो ॥
एक दिन की.....

टिप्पणी
पुरानी केन्द्रीय निमाड़ी में, 'द' की महाप्राण ध्वनि 'ध' उच्चरित हो ती है। (जैसे – 'दाड़की' को 'धाड़की') यहाँ – 'दत्तो द', को 'धत्तो द'

जेष्ठ माह की अमावस्या को डोड वळई अमावस्या कहते हैं। अर्थात वर्षा की वह शुरुआत जब मेंढकों की आवाज आती है। डोड शब्द टोड अर्थात मेंढक का अपभ्रंश है। इस दिन गांव के लड़के किसी एक को मेंढक बना कर धत्ता मांगते है। वे भगवान इन्द्र से अपेक्षा करते हैं कि पानी खूब बरसे।

[मु. ले.]

धत्तो दऽ माय धत्तो दऽ।
धत्तो दऽ नऽ टुलई भरी दऽ॥
टुलई मऽ नि होय तो–
टोपली मऽ सी दऽ।
टोपली मऽ नि होय तो–
[1]उतरुण मऽ सी दऽ।
उतरुण मऽ नि होय तो–
कोठी मऽ सो दऽ।
कोठी छाबेल होय तो–
[2]सैणों फोड़ी दऽ।

---

[1]उतरुण=कोठी, कनस्तर, डिब्बे इत्यादि।

[2]सैणों=बड़ी कोठियों का नीचे का छोटा ढक्कन।

धत्तो दऽ माय धत्तो दऽ ।
धत्तो दऽ नऽ टुलई भरी दऽ ॥

पाणी पड़से खेत मऽ ।
भुट्टा ऊँगसे रेत मऽ ।
जुवार [3]अकरा से [4]ढ़ाळणी आवसे ।
ढ़ाळणी हुई झट काटणी आवसे ।
गाड़ो नऽ सी भुट्टा खळा मऽ ।
लेकरु रड़से खोळा मऽ ।
कमदार जुवार की [5]दावणी करसे ।
दावणी हुई झट [6]घावणी करसे ।
बारह माणी दाणा आवसे ।
[7]कणँगा मऽ सी पल भरी दऽ ।
धत्तो दऽ माय धत्तो दऽ ।
धत्तो दऽ नऽ टुलई भरी दऽ ॥

---

[3]अकरासे = पकेगी ।

[4]ढाळणी = ज्वार को जड़ से काटकर गिराना ।

[5]दावणी = भुट्टों पर, दाने निकालने के लिये, बैल या रोलर घुमाना ।

[6]घावणी = दाबणी, उड़ावनी आदि ।

[7]कणगा = आवाज भरने की बहुत बड़ी कोठी ।

थारो छोरो बड़ो हुई जासे ।

बड़ो हुयो तो–

भणनऽ जासे ।

भणनऽ नानो काशी जासे ।

भणी लिखी नऽ लाड़ी लावसे ।

लाड़ो *ताता रोटा दीसे ।

रोटा खाई नऽ हिन्दा दीसे ।

अज्जी कही नऽ मेलऽ मा ।

नात्या घर मऽ खेलऽगा ।

राज करऽगा, पाट करऽगा ।

वैड़ो घर को काम करऽगा ।

महादेव पऽ गळती धरसे ।

घींव का दिया घर मऽ जळसे ।

दान–धरम–नेक अब तो दऽ ।

धत्तो दऽ माय धत्तो दऽ ।

धत्तो दऽ नऽ टुलई भरी दऽ ।

---

*ताता = गरम ।

सिरी भगवान

जवान लड़के

हिटलर सी उच्ची म्हारी शान ।
मुँडा मऽ गल्लो छव-छव पान ।
कालर उच्ची कुतरा का कान ।
धरम का हाथ बढ़ाओ रे राम ।
है कोई सासू धरमी रे राम ।
म्हारो भी याव कराड़ो रे राम ।
छोरी देणऽ वाळा सिरी भगवान ।।

उम्मीदवार–

कन्ट्रोल खुलो कराड़ाँगा हम ।
लेवी बन्द कराड़ाँगा हम ।
जगह जगह कुआ खोदाड़ाँगा हम ।
धरम का हाथ बढ़ाओ रे राम ।
है कोई जनता धरमी रे राम ।
हमखऽ चुनाव जिताड़ो रे राम ।
वोट देणऽ वाळा सिरी भगवान ।।

चोर–

काळई रात होय भादों की ।
झड़ी लगी होय पाणी की ।
सूनी होय हवेली सेठानी की ।
असो कोई म्होरित बताओ रे राम ।
पुलिस वाळा पहेरा पऽ सवता होय राम ।
जवरो माल हाथ लगी जाय राम ।
सवणऽ वाळा सिरी भगवान ॥

किरायदार–

बिजळई मकान मऽ लगेल होय ।
नळ सी पाणी आवव तो होय ।
मकान वाळो गांव मऽ रह्यतो होय ।
भाड़ो मकान को नि देवाँ हम ।
असो कोई डोकरो मिली जाय राम ।
डोळा बताबणां सी चली जाय काम ।
असो घर धणी सिरी भगवान ॥

शादीशुदा-

याव कर्‌यो म्हारा फूट्‌या करम ।
बामण भाई का छुट्‌या धरम ।
[1]बैरो सुभाव की बड़ी गरम ।
पोर्‌या-पोर्‌या नऽ सी हऊँ हैरान ।
नानसो गगाय मोठो सुणऽ नि काम ।
पाँच वरस मऽ छव लेकरू रे राम ।
अनऽ, देणऽ वाळा सिरी भगवान ॥

[1]बैरो = पत्नी

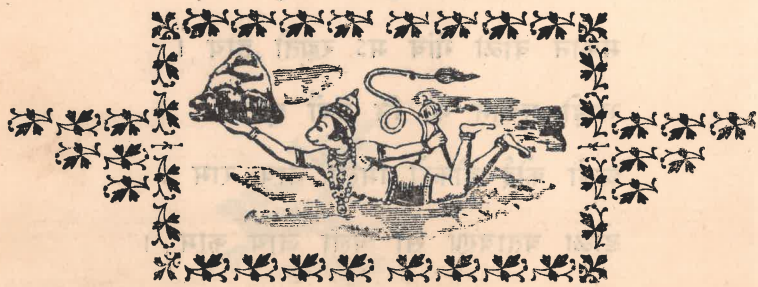

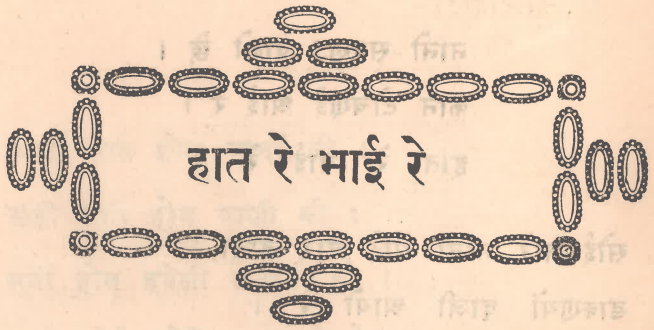

हात रे भाई रे

सोई जारे नाना सोई जारे [1]ताना,
[2]गोदण-वाळो आयो आयो जी ।
संग मऽ कुतरा लायो जी ।
कुतरो को रंग काळो छे ।
गांव मऽ फेरी वाळो छे ।
नानो सवणऽ वाळो छे ।
म्याऊँ माँजरी आई रे ।
हात रे भाई रे ॥

सोई जारे नाना सोई जारे ताना,
बागड़ विल्लो आयोजी ।
मुँडा मऽ ऊँदरो लायोजी ।
ऊँदरा को रंग काळो छे ।
गांव मऽ फेरी वाळो छे ।

[1]ताना = समझदार । [2]गोदण-वाळो = टीका लगाने वाला

[२८]

नानो सवणऽ वाळो छे ।
कान टोचणई आई रे ।
हात रे भाई रे ॥

सोई जारे नाना सोई जारे ताना,
डाक्णयों दाजी आयो रे ।
चिलिम तम्बाखू लायो रे ।
चिलिम को रंग काळो छे ।
गाँव मऽ फेरी वाळो छे ।
नानो सवणऽ वाळो छे ।
कोल्हा की सासू आई रे ।
हात रे भाई रे ॥

म्हारा अंगणा मऽ सदा सुहागेण

म्हारा अंगणा मऽ सदा-सुहागेण,
फूल येचीनऽ लावाँगां ।
नानो भाई हिन्दा सवसे,
हिंदा पऽ फूल बिछावाँगां ।।

[1]होर्‌या-होर्‌या आवऽ रे ।
कोयळ गीत सुणावऽ रे ।
हम गीत सुणी सोई जावाँगां ।
हिन्दा पऽ फूल बिछावाँगां ।

नाना भाई की नींद खऽ लेणऽ,
इन्दर राजा आवगा ।
सात रंग्या घोड़ा का रथ मऽ,
सैर-सपाटा करी आऽवगा ।।

उड़न खटोलो लायो रे ।
बद्‌दल मऽ लै जाओ रे ।
हम परीनऽ का देस मऽ जावाँगां ।
हिन्दी पऽ फूल बिछावाँगां ।।

रिमझिम-रिमझिम पड़से पाणी,
पोर्‌या-पारई न्हावगा ।
नाना का भायजी खेत मऽ जासे,
काकड़ी भुट्टा लावऽगा ।।

---

[1]होर्‌या=तोता ।

तापड़ी कोई सिलगाओ रे ।
कोई सेंगळई सेको, खाओ रे ।
हम गुड़ दाळया लै आवाँगां ।
हिन्दा पऽ फूल बिछावाँगां ।

रूनुन-झुनुन घुघरा वाजऽ
याव लेणऽ मामाजी आवऽगा ।
अड़दा-पड़दा की गाड़ी मऽ,
[२]मसरी की गादी लावऽगा ॥

[३]कड़छान मऽ तड़ु बिछाओरे ।
पाणी गड़ु मऽ लाओ रे ।
कड़ु. वईण का [४]ढेळ्या जावाँगां ।
हिन्दा पऽ फूल बिछावाँगा ॥

रेशम को झूलो धिरू धिरू दिजो,
गुलबो म्हारो सोई रह्योज ।
छटी माता नऽ ओखऽ खेलायो,
पुळुक-पुळुक भाई हँसी रह्योज ॥

चाँदोबा तुम आओ रे ।
भाई खऽ झुला झुलाओरे ।
[५]दादुर गीत सुणावाँगा ।
हिन्दा पऽ फूल बिछावाँगां ॥

---

[२]मसरी=मलमल सा कपड़ा ।
[३]कड़छान=कमरे और आँगन के बीच की जगह
[४]ढेळ्यो=नई दुल्हन की सखा । [५]दादुर=मेन्डक ।

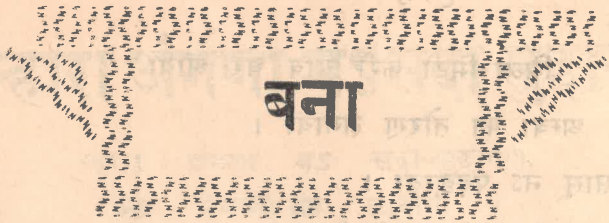

बना

ब्याह शादी के अवसर पर दूल्हे की प्रशंसा में गाये जाने वाले गीतों को "बना" कहते हैं। यहाँ एक बना गीत में बारात से लेकर ऐकी-बेकी तक और दूसरे में सिर्फ लाल रंग की महत्ता का, जो कि प्रेम सूचक है, वर्णन किया गया है। [भू० ले०]

आया नवा-नवा वेषी ।
बना परदेशी ।
मंडप की छबी न्यारी छे ॥

याव बनाजी रेल पऽ आया ।
संग वराती लाया ।
वरात मऽ बाजा लाया ।
बाजा की छबी न्यारी छे ॥

रेल सी उतर्‌या बना गाँव मऽ आया ।
मंदिर जनवासो उतराया ।
जनवासो मन भाया ।
मन्दिर की छबी न्यारी छे ॥

[३२]

मिळा-मिटी करी याव घर आया ।
अम्बा का तोरण लगाया ।
सासू नऽ पड़छाया ।
मुस्सळ की छबी न्यारी छे ॥
पूजा हुई अन्तर-पट लगाया ।
गोरज लगीण लगाया ।
बनी का मन भाया ।
जोड़ी की छबी न्यारी छे ॥

गोत्र कह्या बना चवरी फिराया ।
पंगत मऽ सदर लगाया ।
बना सी परसाया ।
पंगत की छबी न्यारी छे ॥

रात बनाजी याव घर बुलाया ।
सिंगोड़ा का खेल खेलाया ।
बनो खऽ हराया ।
बना की बलिहारी छे ॥

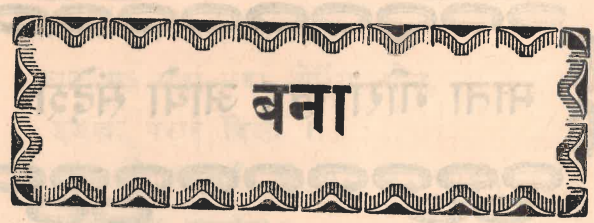

आया रे बना मोती वाळा महेल सी ॥

पागड़ी भी लाल छे, कुरतो भी लाल छे ।
अबीर का संग बना उड़तो गुलाल छे ।
मस्तानी चाल छे ।
आया रे बना मोती वाळा महेल सी ॥

जूता भी लाल छे, दुपट्टो भी लाल छे ।
हाथऽ बनाजी का लाल रूमाल छे ।
घुंघराळा बाल छे ।
आया रे बना मोती वाळा महेल सी ॥

बाजा भी लाल छे, नऽ घोड़ो भी लाल छे ।
माथऽ बनाजी का कुंकू भी लाल छे ।
उच्चो कपाळ छे ।
आया रे बना मोती वाळा महेल सी ॥

पेरावणी लाल छे, वराती भी लाल छे ।
म्हारा बनाजी की ऊँची मिशाल छे ।
बनवारीलाल छे ।
आया रे बना मोती वाळा महेल सी ॥

माता गौरां खऽ आयो संदेश

गरभा निमाड़ का भी राजस्थान से कुछ कम नहीं। नौ चंदी में तो इसकी छटा देखते ही बनती है । प्रस्तुत गरभा लेखक के नाटक भूख में खेला जा चुका है ।

[भू० ले०]

माता गौरां खऽ आयो संदेश,
पिया का घर जावाँगां ।
आज दुर्गा देवी रमसे मढ़ी मऽ.
गरभो गावाँगा ॥

हाथ मऽ खनन्-खनन् वाजऽ चूड़ी नऽ;
भैया जी असी लाई दीजो ।
हमरा माथा पऽ बिन्दी गळा मऽ-
[1]वजट्टी, पेराई दिजो ।
हम तो अड़दा-पड़दा की गाड़ी मऽ,
सासरऽ जावाँगां ॥
आज दुर्गा देवी ....

---

[1]वजट्टी = गले का आभूषण ।

पांय मऽ घुघरी वाळा हम खऽ रमझोल,
पिताजी तुम लाई दिजो ।
कान मऽ नवा-नवा 'येरिंग' गोळ,
हमखऽ पेराई दिजो ।
हम तो [२]मसरी की पेरी नऽ साड़ी,
सासरऽ जाबाँगां ॥
आज दुर्गा देवी ... ...

हम तो माथो गुथाँगां; [३]नरवेल,
माताजी तुम लाई दिजो ।
हमरा गोरा-गोरा हाथ मऽ लाल,
मेंहदी रचाई दिजो ।
हमतो काजळ पेरी नऽ सखी देस,
पिया का जावाँगां ॥
आज दुर्गा देवी ... .

---

[२]मसरी = रेशमी मलमली कपड़ा ।
[३]नरवेल = सिर गुथने का सामान नाड़ा, काड़ी,
बोरा इत्यादि ।

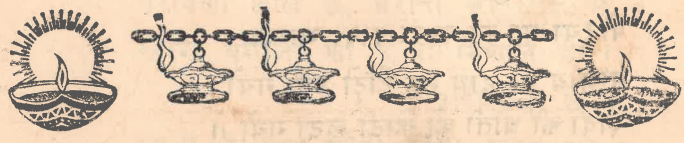

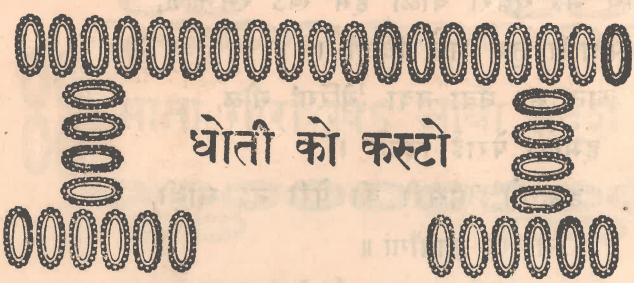

धोती को कस्टो

आटक माटक दही चटख–
दादा गया दिल्ली,
दिल्ली सी लाया सात कटोरी।
एक कटोरी फूटी,
दादा कीं टांग टूटी।
दादा की लम्बी चूटी।
आळा अध्दर खूँटी।
खूँटी मऽ अटकी चूटी।
दादा झटपट जाग्या रे,
पोर्‌या–पारई भाग्या रे।
भागतऽ भागतऽ एक अड़ी गयो,
दादा का मुँडा सी दाँत पड़ी गयो।
नानो भाई गगायो रे।
दादा खऽ घुस्सो आयो रे।
पोर्‌या नऽ का पाछऽ दादा भाग्या,
मम्माय का हाथ मऽ टोटो उठी गयो।
दादा की धोती को कस्टी छुटी गयो॥

— × × × × × × —

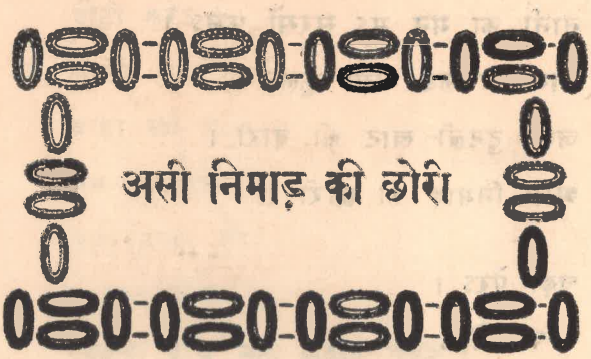

थोड़ी काळई थोड़ी गोरी ।
असी निमाड़ की छोरी ॥

पोलको पेरऽ ।
घाघरी पेरऽ ।
लाल किनार की–
साड़ी पेरऽ ।
साड़ी की किनार मऽ-
गोटो पेरऽ ।
पन्हो जरा छोटो पेरऽ ।
'लाड़की' लुगड़ो मोडो पेरऽ ।
चार बोट को घुमटो झूलऽ ।
घुमटा भीतर येरिंग झूलऽ ।
गळा मऽ सोना की माळा झूलऽ ।
कपाळ उपर कुँकू खुलऽ ।

नानी का मन मऽ सरसों फूलऽ ।
माथा प लट असी झूलऽ ।
जसी टुटली खाट की दोरी ।
असी निमाड़ की छोरी ॥

चूड़ी पेरऽ ।
चम्पक पेरऽ ।
गोरा हाथ मऽ-
कड़ा पेरऽ ।
दुवई पाँय मऽ-
तोड़ा पेरऽ ।
बड़ो मठो जूड़ो फोड़ऽ ।
तीन दिन मऽ आईनो तोड़ऽ ।
काळई पेळई माटी लावऽ ।
गउर-सहेली नकल्या गावऽ ।
अपणी-अपणी गरभी लावऽ ।
गनागौर नऽ गरभा गावऽ ।
मिट्ठी-चिट्ठी वात नऽ करऽ--
जसी होय शक्कर की बोरी ।
असी निमाड़ की छोरी ॥

रोटी करऽ ।
पाणी भरऽ ।
बन्हा लई नऽ-
धम-धम चलऽ ।
बड़ी फजर सी-
उड़द्या भेंड़ऽ ।
उड़द्या होय मट जुवार चेंड़ऽ ।
सौंदारऽ सी मही फेरऽ ।
मही करऽ लोणी निकाळऽ ।
लोणी को उऽ घी तपावऽ ।
चोरी-चोरी गुड़ फकावऽ ।
सासू होय या नळंद जेठाणी-
सब सी लड़ऽ नऽ करऽ मुजोरी ।
असी निमाड़ की छोरी ।।

'ग्यारस खोपड़ी'

अमोस हुया खऽ ग्यारह दिन ।
गड़बड़ भाई की झोपड़ी– ।
झोपड़ी मऽ ग्यारस खोपड़ी ।
खोपड़ी का ग्यारह टोटा ।
टोटा मऽ भुट्टा मोटा ।
भुट्टा मऽ टीचो भरी दाणां छे ।
दखणी दाजी काणां छे ।
डोडा माय उपास करसे ।
पूजा ग्यारस खोपड़ी की करसे ।
खोपड़ी मऽ देव सोयेल छे ।
खेत मऽ चणां बोयेल छे ।
देव नऽ खऽ आज जगाड़ाँगां ।
पूजा-पाठ कराड़ांगा ।
काको ग्यारह कावा फिरसे ।

काकी चुरमो दाळ भात करसे ।
नन्नू फुलझड़ी छोड़ेगा ।
मंगू भाई बम फोड़ेगा ।
डोकरो दाजी ह्यायो रे ।
माय नऽ भोग बणांयो रे ।
माय थकी गई झाळ पटक से ।
दाजी का मुंडा सी राल टपक से ।
नाना की परात मऽ भात नि हांई ।
दादा का मुंडा मऽ दात नि हांई ।
झटपट देव नऽ खऽ भोग लगाओ ।
कुंकू दाणा सी आरती सजाओ ।
बिल्ली, देखी ऊंदरा राजी ।
टिल्ली का एक्खारा दाजी ।
अवळया सवळया बोर भाजी ।
उटोरे देव नऽ होणी घंटाळ वाजी ।।

पावणांजी–से

म्हारी छोरी खऽ दुःख मत दीजो–
पावणांजी म्हारी छोरी खऽ दुःख मत दीजो।
बोका वाटऽ तुम काम करी दीजो ॥
पावणांजी... ... ...

म्हारी छोरी खऽ देर सी उठनऽ की ह्वाण छे।
वो खऽ उठाड़जो जवँ [1]उकळऽ [2]अंणह्वाँण छे।
कदि उठऽ, तुम चाय बणई दीजो ॥
पावणांजी... ... ...

म्हारी छोरी खऽ बड़ो कायदो काण छे।
तावा पाणी सी बोखऽ न्हावण की [3]ह्वाण छे।
बयरो न्हाव से, तुम [4]पूट रगड़ी दीजो ॥
पावणांजी... ... ...

[1]उकळ = उबले। [2]अंणह्वाँण = चाय का गरम पानी।
[3]ह्वाण = आदत। [4]पूट = पीठ।

म्हारी छोरी को जरा ठंडो-ठंडो काम छे ।
भायरा-सोयरा देणो जेठाणी को काम छे ।
'उ' माथो ईचरऽ, तुम जूँ नऽ देखी दीजो ।।
पावणांजी... ... ...

रोटी-पाणी करनऽ सासू खऽ भिड़ाव जो ।
उप्पर-टप्पी कामऽ नळंद खऽ लगाव जो ।
लुगई जिमी ले, तुम बासण मांजी दीजो ।।
पावणांजी... .. ..

सासू खऽ कयजो ते बिस्तर लगाव से ।
ससरा खऽ कयजो कि पंखो हलाव से ।
'उ' सबसे तुम पांय दाबी दीजो ।।
पावणांजी.... ....

मायक्या मऽ नि लगतो जिव

आकाशवाणी इन्दौर से प्रसारित इस गीत में नयी ब्याही दुल्हन, जो कि अपने मायके में है, पति से कहती है कि वे आये और मुझे अपने साथ ले जाय अब मायके में उसका मन नहीं लगता । पति कई तरह से समझाता है और अंन्त में विवश होकर यह सच्चाई बता देता है कि, उसके पिताजी नहीं चाहते कि बहू को इन दिनों घर लाया जाय क्योंकि यह कटनी का समय चल रहा है । [भू० ले०]

पत्नी– म्हारा धणियर राजा आओ ।
अपनी रणुबाई खऽ ले जाओ ।
म्हारो मायक्या मऽ लगतो नि हाँई अवँ जिव ।

पति— नानी मोठी बईण को आवणों ।
पाणी दस बेड़ा को लावणो ।
गोरी बुरो हाल थारो ह्याँ हुई जा से ॥

पत्नी- पाणी पन्द्रह बेड़ा लाऊँगा ।
घर को चुक्तो काम करूँगां ।
मखई लै चलो तुम संगात अपणा ॥

पती— खेत म ढाळणी छे जुवार की ।
जाणु पड़से तू खऽ धाड़ की ।
घाम मऽ गोरो रंग थारो काळो पड़ी जासे ॥

पत्नी- [1]धाड़की तुम्हारा संग जाऊँगा ।
वाड़ी मऽ मोटऽ गेरूँगा ।
पाणी वाळजोतुम, हाऊँ घर सी रोटा करी लाऊँगा ॥

पती— नळंद जेठाणी काम लगाव से ।
सासू अल्लक टोळचा मारसे ।
ससरो दिन भरी तूखऽ कुर-कुर करी नाखऽ से ॥

[1]धाड़की = मजदूरी ।

पत्नी– पांय जेठाणी का दाबूँगा ।
सासूजी खऽ हिन्दा देऊँगा ।
रोटी ताती-ताती ससराजी की ठाटीं धरूँगा ॥

पति— सच्ची वातऽ काई दपड़ावणुँ ।
दादाजी को पड़ऽ कयणुँ ।
अबेकर लावता नि वैड़ी खऽ घर अपणा ।

जिव को जंजाळ

रिमझिम-रिमझिम पाणी आयो,
जिव को छे जंजाळ रे ।
पोर्‌या-पारई डाबरा मऽ न्हावसे,
म्हारा जिव को काळ रे ॥

एक नि सुपनो म्हारो, माय तूखऽ काई बताऊँगा ।
दिन भरी करुँ करपट्टो, संजा पड़ी भसी लगाऊँ ओ ।
घर मऽ सी [1]पायगो मऽ नऽ पायगो मऽ सी छान मऽ-
भायरा दई दई भरी जाऊ ओ ।
नानसो पाणी डाफळई नाखऽ, भरी भरी थकी जाऊँ ओ ।
नत्था खऽ बिलगूँ पून्यो भागऽ, फत्या का निकळया जमाळ रे ।।
पोर्‌या-पारई.............

एक भागऽ घोया पऽ दूसरो, चूल्हा मऽ कंडा भोकऽ ओ ।
तुमरा जवई बाड़ी मऽ जाती ह्लय, इनखऽ कूण रोकऽ ओ ।
ईशलो बजाड़ऽ भान मिर दिग, छोटो ठाटो ठोकऽ ओ ।
नाथ बाबा पऽ काळयो छुकाड़ऽ, कुतरा वो पर भुकऽ ओ ।
बड़ो! बड़ो बज्जात भरीगो पेरोले घुघ्घर माळ रे ।।
पोर्‌या-पारई ....

[1]पायगो=पशु बाँधने की जगह

ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ

जै खिचड़ी मैया

ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ—ॐ

जै खिचड़ी देवी हो मैया जै घट्टी घैड़ी।
तुमको निस दिन खावत, दगडू भाई की [1]वैड़ो॥

ॐ जै खिचड़ी देवी॥

मूंग की दाळ, मसूर को, तोर खऽ वार लगती।
कांदा लसुण वघारत, डोकरी माय सर्‌यो फेरती॥

ॐ जै खिचड़ी देवी॥

गरम मसालो कोतमिर, खोब सुगंध करती।
मधुरो आँच बफाती अंगारा धरी झट चुड़ती॥

ॐ जै खिचड़ी देवी॥

[2]नकु-नकु लाड़ी परसती कुन्डो भरी दपड़ावती।
फुड़को वघारेल चोळो, नानी म्हारी फुड़कावती॥

ॐ जै खिचड़ी देवी॥

---

[1]वैड़ो=बहू

[2]नकु-नकु=थोड़ी-थोड़ी

चोळा संग वघारेल खिचड़ी, जो कोई मर खावे।
कहत "निमाड़ी" सबसे सीधा सरग पावे =
ॐ जै खिचड़ी देवी ॥

खिचड़ी खा, हो कल्याणम्
आरोग्यं सुखं-सम्पदाम्
शत्रुओं पर विनाश आये,
खिचड़ीयोंति नमोऽस्तुते ॥

आपदा हो भरतारम्,
खिचड़ी खा हो सम्पदाम्।
लोकः विलोकः श्री चन्द्रम् पर,
खिचड़ी तुभ्यं नमामिहं ॥

भूत पलीत पवन लगऽ, खिचड़ी मंगल रुप।
सगड़ी पर झटपट बणऽ, खिचड़ी भोजन भूप ॥

दुई सर्‌या वघारेल खिचड़ी की जै।

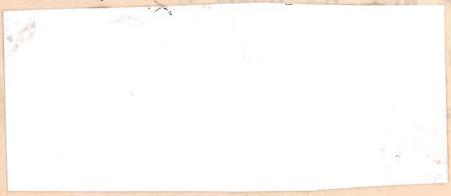

नाँगरू बखरू नऽ गोखरू

निमाड़ के एक गरीब किसान की सारी जिंदगी इस कविता के कहावत शीर्षक से जानी जा सकती है। कहावत नांगरू बखरू नऽ गोखरू का अर्थ है किसान अधनंगा रहे, खेत में हल बख्खर जोते और अन्त में उसके लगे सिर्फ कांटे। [भू. ले.]

लोग चाँद पर जाता हुसे,
भसी चरावसे अपणा लेकरू।
किरसाण का तो भाग लिख्याज,
नाँगरू बखरू नऽ गोखरू॥
मिरी नऽ वावसाँ--
होर्‌या चरसे।
तोर आऽवसे-
पोर्‌या वरप से।

[1]वानी-मोंगर—
खेत मऽ आऽवसे,
आधी सी जादा—
लोग खाई जासे ।
मोट गेरूँगा—
खेत भरासे ।
उड़दूया उड़ावणी,
घर की करसे
घावणी होसे—
चौकी लगसे,
आघऽ-आघ-
[2]घाड़क्या लै जासे ।
पाणि पड़ऽ कि साल पड़ऽ,
दूणी बीजई मांगसे बोंदरू ।
किरसाण का तो भाग्य लिख्याज,
नाँगरू-वखरू नऽ गोखरू ॥
थोड़ो घणों कंई—

[1]वानी, मोंगर=खाने की मीठी ज्वार
[2]घाड़क्या = मजदूर

घर मऽ घरसाँ ।
बाकी हाय-बाप सी
[3]गोणाँ मऽ भरसाँ ।
सैगल रात—
ढांडा कुटसाँ,
शह्योर मऽ आई नऽ—
नाको भरसाँ ।
औखो दिन—
मंडो मऽ फिरसाँ ।
भूख लगी गुड़-दाळया खाँसा ।
थोड़ों घणो तो—
अड़त्यो खासे ।
बच्यो-कुच्यो-
वाणयो लै जासे ।
अपणा हाथ मऽ जो कई पड़से,
ओका लुगड़ा बुलाड़से जोरू ।
किरसाण का तो भाग लिख्याज,
नाँगरू बखरू नऽ गोगरू ।।

---

[3]गोणाँ = बैलगाड़ी में अनाज-कपास भरने का बड़ा भारी थैला ।

चाय महिमा

जय जय जय जय पूजा पाणी,
जय कुलदेवी माता चाय ।
बड़ो प्रेम भक्ति से हमनऽ,
नाव थारो धर्यो चाय ॥

[1]बड़ी-फजर उभा हुई नऽ हम,
चूल्हा तरफ हम देखाँ जी ।
कदि [2]चरपट मारऽ भाईजी,
हम बड़ी जोर सी रेकाँ जी ॥
चहा को पत्ती दूध नऽ पाणी,
गुड-शक्कर लै लेवाँ ।

[1]बड़ी-फजर=सुबह-सुबह
[2]चरपट=चाँटा

बड़ा प्रेम सी फूक मारी नऽ,
चूल्हा खऽ सिलगई लेवाँ ।।
[3]कोप-रकाबी मऽ धरो नऽ,
वैड़ो म्हारी पेती जाय ।

बड़ी प्रेम भक्ति सी हमनऽ,
नाव थारो धर्‌यो चाय ।।

उकळती हंडा मऽ देखो नऽ,
लेकरु म्हारा कूदऽ जी ।
पायड़ो गुवाण मऽ सी रेकऽ,
अनऽ गावड़ो दोयड़ो तोड़ऽ जी ।।
सब जण उरकी जाय तवँ,
पटलेळ म्हारी आवऽजा ।
वोका वाटऽ की हाऊँ पी जाऊँ, ते-
घुर-घुर मखऽ देखऽ जी ।।
लड़ी-पड़ी ते तीन दिन लग,
बोली नि म्हारा सी नाना की माय ।

[3]कोप-रकाबी = कप-बशी

चाय को घड़ी भट आई बठी,
थोऽ थारी सासू कौंदा खाय ।।
चहा को लग्यो चस्को,
वैड़ी म्हारी घर घर बठणऽ जाय ।
बड़ी प्रेम भक्ति सी हमनऽ,
नाव थारो धर्‌यो चाय ।।

पिया मिलन की आस

प्रेमी- पाणी रिमऽझिमऽ आवऽ ।
कोयळ अम्बा पऽ गावऽ ।
गोरी असा मऽ तू आईजा म्हारा पास रे ।
आज पिया मिलन की आस रे ॥

प्रेमीका- ठंडी-ठंडी हवा आवऽ ।
म्हारो पल्लव उड़ावऽ ।
पिया असा मऽ तू आयो जा म्हारा पास रे ।
आज पिया मिलन की आस रे ॥

प्रेमी- तड़फी-तड़फी नऽ म्हारी कहानी ।
जिव भरी कर छे थारी जवाणी ।
मत तरसावऽ आयी जा ।

गोरो मुखड़ो बतई जा ।
थारा प्यार की गोरी मखऽ प्यास रे ।
आज पिया मिलन की आस रे ॥

प्रेमिका– अपणी मजबूरी कसी हाऊँ बताऊँ ।
पहेरा लगेल छे मिलनऽ कसी आऊँ ।
मत तरसावऽ आयी जा ।
प्रिया खऽ गळा सी लगई जा ।
थारा प्यार की पिया मखऽ प्यास रे ।
आज पिया मिलन की आस रे ॥

प्रेमी– गोरी कुंवार को महिनो छे उम्दा ।
निकळयो सरद पुन्योव को चन्दा ।
चाँदनी रात मऽ आई जा ।
घड़ी भरी वात करी जा ।
मत तड़फावऽ आयी जा गोरी पाऽस रे ।
आज पिया मिलन की आस रे ॥

प्रेमिका- चढ़ती रात अकेली कसी आऊँ ।
आगऽ लगी दिल मऽ कसी हाऊँ बुझाऊँ ।
चांदनी रात मऽ आयी जा ।
घड़ी भरी बात करी जा ।
मत तड़फावऽ आयी जा पिया रे ।
आज पिया मिलन आऽस रे ॥

मोतीचुर का गोला

इस हास्य गीत में कवि ने सुन्दरी के कपोलों को मोतीचुर के लड्डू की उपमा दी है । [भू. ले.]

गाल मोतीचुर का गोळा ।
मोटा-मोटा थारा डोळा ।
दात, गोरी थारा जसा-
बत्तीस [1]सिरगोळा ॥

[1]सिरगोळा = रांगोली का सफेद नुकीला पत्थर

सुणो लऽ सुणो लऽ ओ [२]बिराणी ।
थारा हाथ पांय छे [३]पिरहाणी ।
चाल थारी छे जसी होय-
तेलेण की —— घाणी ।।

थारो रुप देखी नऽ राणी ।
म्हारा मन मऽ फूटऽ घाणी ।
पाव म्हारा संग करोलऽ,
भर नऽ लगूँगा——पाणी ।।

थारा बाल काँदा की जाळई ।
मानीजा नार चरावण बाळई ।
करऽगा राज तू बणीजा,
म्हारी —— घर बाळई ।।

थारी उम्मर छे सोळा ।
राणी राजा हम छे भोळा ।
चल ओऽ खेत मऽ गोरी,
नहाँ ऊँग्या —— होळा ।।

[२]बिराणी = पराई

[३]पिरहाणी = बैल हकालने की पतली लकड़ी ।

थारी नानी-नानी अंगळई ।
जसी भुई-मूंग की सेंगळई ।
थारो गळा को छे सुर,
जसी वाजऽ ओ पावळई ॥

शरद पूर्णिमा की रात गीत गा-गाकर गावों में घरों से अनाज इकट्ठा किया जाता है और उसे गाय आदि को खिलाया जाता है। इसे कमळ्यो मांगना कहते हैं।

[भू० ले०]

सिंगाजी की पुन्योंव छे।
पुन्योंव को ऊँगतो चाँद छे।
चाँद सो छोरो थारा घर मऽ।
गावड़ी-भसी म्हारा घर मऽ।
थारा घर सी कमळ्यो लीसाँ।
कमळ्यो लै नऽ गावड़ी खऽ दीसाँ।
हम-खऽ जेतरो पुन लगसे,
ओका मऽ सी आधो तूखऽ दिसाँ।

थारो छोरो बैड़ी लाऽव से।
बैड़ी घट्टी भैड़ी लाऽव से।
घट्टी को पुड़ भारी छे।
बैड़ी को पांय भारी छे।
पूरा दिन मऽ छोरो हुसे।
छोरो चाँद को टुकड़ो हुसे।
ठुमुक-ठुमुक भाई नानो घुमसे।
बड़ो हुई नऽ भाई तानो घुमसे।
तानो हुयो भाई वानो घुमसे।
भाई पन्ही नऽ आऽवगा।
नानी लाड़ी लाऽवगा।
नात्या हुसे पोत्या हुसे।
पोत्या घर माय धोत्या हुसे।
धोत्या घर लँगोटया हुसे।
लँगोटया घर फाळक्या हुसे।
घर मऽ बैड़ी की वैड़ी आऽवसे।
हिन्दा भुलजे राज करजे।
खाजे रोज नवा-नवा खाना।
दऽ ओ-माय दुलेक दाणा।

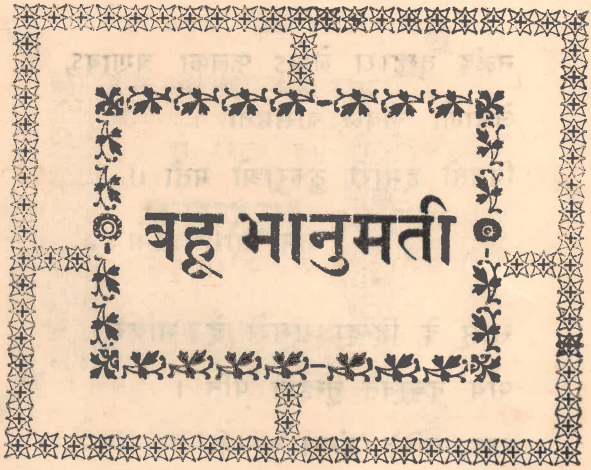

बहू भानुमती

तुम जागो-जागो भानुमती ।
पंखो करत है तुम्हरो पति ॥

सासू भी जागी नळंद भी जागी,
जाग्या देवर, जेठानी——सती ।
चरम डुलावत तुम्हरो पति ॥

तुम जागो-जागो .....

दस बजे की घंटी बजी गई,
स्कूल जायेगी श्यामवती ।
अरज करत है तुम्हरो पति ॥

तुम जागो जागो .....

नळंद तुम्हारा लेणऽ फुलका बणावऽ,
जेठाणी चाँवळ बांसमती ।
विनती हमारी ठुकराओ मती ।।

तुम जागो जागो .....

सासू दे हिन्दा ससरो दे भायरा,
पांय दबावत तुम्हरो पति ।
रत्न जड़ित मंगल आरती ।।

तुम जागो जागो .....

मानुमती थारो पति राजाराम ।
ससरो थारो सीताराम ।।
सीताराम ससरो को नाम ।
देवर थारो भायराम ।।
हुकुम [1]बजावणों हमरो काम ।।
चरण तुम्हारा चारों धाम ।।

[1]बजावणों = मानना, सुनना ।

दूज को चाँद निकळ्यो

लड़का-- गोरी आई जाजे [1]घोया का पार,
दूज को चाँद निकळ्यो ।।

लड़की— हम आवाँ कसा [2]झोपला मऽ,
दादाजी को पलंग पड्यो ।।

लड़का— ठंडो-ठंडो चाँदनी, ठंडो-ठंडो रात छे ।
ठंडो-ठंडो हवा वहे दुई घड़ी की वात छे ।
लम्बो-लम्बो छे अंबुवा को हार-
दूज को चाँद निकळ्यो ।। गोरो .....

[1]घोया=गांव बाहर

[2]झोपला=दरवाजे के बाहर

लड़की— जिव धड़कऽ म्हारो ई पहेली मुलाकात छे ।

अकेली कसी आऊ ई काळई–काळई रात छे ।

बाप्पा पास छे ढोरनऽ को [3]गुवाण–

वहाँ दादाजी को पलंग पड़्यो ।। हम ......

लड़का— पेरी रमभोळ गोरी छम-छम आवजे ।

साड़ी का साथ मऽ [4]घुमटो मत लावजे ।

आज सैंया मिलन की रात--

दूज को चाँद निकळ्यो ।। गोरी ... .

लड़की— डोळा मऽ नींद हाँई नि हिरदा मऽ चैन हाँई ।

पहेरा लग्याज वसो अपणी तो न्है नि हाँई ।

अल्याँ माय खऽ छे खासणऽ को व्हाण ।

वत्याँ दादाजी को पलंग पड़्यो ।। हम......

[3]गुवाण=गाय बांधने की जगह

[4]घुमटो=घूँघट

लड़का— हरी-हरी चूड़ी अनऽ लाल-लाल साड़ी।
डोळा मऽ काजळ, जसी नवी-नवी लाड़ी।
आज करी आवजे सोळा सिंगार--
दूज को चाँद निकळ्यो ।। गोरो.....

लड़की— मोठा भाई खऽ रात-रात नींद नि आवती।
अपणी मुलाकात भाभो खऽ नि भावती।
छोटा भतीजा खऽ चुगली को व्हाण--
दादाजी को पलंग पड्यो ।। हम.....

राखी को तिवहार छे

श्रावण को महिनो आयो,
[1]म्हावटा की फुहार छे।
राखी को [2]तिवहार आई गयो,
भाई लंका का पार छे ॥

आरती बईण सजावऽगा ।
हळदी कुंकू लावऽगा ।
धेला पर कपूर की बट्टी ।
भाई फोड़से नारेळ की नट्टी।

[1]म्हावटा = बे मौसमी पानी की हल्की सी झड़ी।
[2]तिवहार = त्योहार ।

पाट कळस को सजाऽव छे।
राखी को तिवहार छे।
भाई लंका का पार छे।।

बईण पेऽर से झग-झग साड़ी।
'मंगलेश' भाई की छुटसे नाड़ी।
आरती को नेक देणु पड़से,
लिये बिना 'अलका' बईण अड़से।
जे का गळा मऽ सोन्ना को हार छे।
राखी को तिवहार छे।
भाई लंका का पार छे ।।

नत पेरऽगा 'चन्दा' राणी।
'इन्दर' राजा वरसाव से पाणी।
नानो भाई हिन्दा भूलऽगा।
खेत मऽ सरसों खोब फुलऽगा।
घोया पऽ आवती नार छे।
राखी को तिवहार छे।
भाई लंका पार छे ।।

पैसा को बईगा गुड़ लै आवसे ।
भाई खऽ राखी बाँधऽगा ।
नेक मऽ मिलसे रेशमी साड़ी,
झट-पट आरती उतारऽगा ।
मोठा भाई को दूर [illegible]वास छे ।
राखी को तिवहार छे ।
भाई लंका का पार छे ।